4–5–67 ओमशांति रात्रीक्लास

आज तुम बच्चों को थोड़ा ज्ञान और योग पर समझाते हैं। फिर है ध्यान और दीदार। कोई ध्यान में सुन में चले जाते हैं। कोई को दीदार होता है। ध्यान और दीदार में कोई फायदा नहीं है। बाकी योग और ज्ञान में फायदा है। ध्यान, दीदार में नुकसान हो सकता है। ज्ञान, योग में नुकसान नहीं। ध्यान,दीदार में माया की प्रवेशता होती है। वो बहुत खराब है। इसलिए हमेशा खबरदार रहना चाहिए। बच्चों की एम ऑब्जेक्ट है कि हमको प्रिंस बनना है। प्रिंस तो (त्रेता) के पिछाड़ी में भी बनेंगे। उसमें ही खुश नहीं होना चाहिए। याद में रहना चाहिए। याद करते2 हम सतोप्रधान बन जावेंगे। तो हम उंच प्रिंस बनेंगे। बच्चों को समझाया गया है कि भक्तिमार्ग बिल्कुल अलग है। उसका ज्ञान से कनेक्शन नहीं है। भक्ति है दुर्गति। ज्ञान है सदगति। ज्ञान देने वाला ज्ञान सागर ही है। कब भी यह चाहना ना हो कि हमको दीदार हो। वो इतना उठा नहीं सकेंगे। बच्चे जानते हैं कि हम कुछ नहीं जानते थे। बाबा आप ही सब कुछ देंगे। ढेर2 बच्चे हैं ,क्या2 बैठ पूछेंगे। हर एक को घर बैठे ही सब समझानी मिल जाती है। बाप ही सब कुछ जानते हैं। बच्चे कुछ नहीं जानते हैं तो फिर पूछेंगे ही क्या?पूछने का कुछ रहता ही नहीं है। हां, कहां शादी में जाना है ,नहीं जाना है वो पूछ सकते हैं। कहीं खावेंगे नहीं तो कहेंगे भाग जाओ। वो पूछना होता है कि इस हालत में क्या करें?बाकी सृष्टि चक्र की हर बात बाबा समझाते रहते हैं। ध्यान वालों पिछाड़ी कब आशिक नहीं होना है। समझते हैं बस सा. हुआ तो मंज़िल पर पहुंच गये। दिल की आश पूरी हो गई। नहीं2 भक्तिमार्ग की आशायें सब निराशायें हैं। आश पूरी करने वाला एक ही है। मुक्ति जीवनमुक्ति क्या चीज है कोई नहीं जानते हैं। बाप ही सब कुछ जानते हैं। इसलिए उनको नालेजफुल ज्ञान सागर कहा जाता है। भगवान है मनुष्य सृष्टि की बीजरूप। उनको ही सत, चैतन कहा जाता है। तो बीज में क्या नालेज होगी?झाड़ की। मनुष्य में सारे मनुष्य सृष्टि रूपी सारे झाड़ ....ध्यान में जाती है, भोग ले जाती है उन बातों मे आशिक नहीं हो जाना चाहिए। याद तो है नहीं। विकर्म विनाश तो होते नहीं हैं। बाबा की प्वाइंट्स भी सुन नहीं सकते। जब नी आवें तब सुनें। वो कोई याद की यात्रा नहीं है। सूक्ष्मवतन में भोग ले जाते हैं वो तो है चिटचैट। उन बातों में नहीं जाना चाहिए। भोग का राज भी समझाया जाता है। आत्मा कोई आती है, रोती है ;क्योंकि मेहनत नहीं की तो पछताना होता है कि हमने वर्सा तो लिया नहीं और ही गुमाया है। हमने बाप का माना नहीं है। बाप की मानते नहीं हैं तो फिर आंसू बहाते हैं। हो कुछ नहीं सकता। इसलिए जल्दी2 याद में रहो। पिछाड़ी में उतना याद में ठहर नहीं सकेंगे जो कि विकर्म विनाश होवे। और ही खिटपिट की ,अफसोस की बातें होती रहेंगी। गवर्मेंट लूटेगी ,यह करेगी। यह है ही अति दुःख का जमाना। बाप सुख देने आते हैं तो बच्चों को बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। कब रूठना नहीं चाहिए। पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। उन जैसा कम्बख्त कोई नहीं। भगवान पढ़ाते हैं 21जन्म का वर्सा देते हैं। ऐसे बाप को छोड़ देते हो?तुम अभी सुनते हो विलायत वाले 10रोज बाद सुनेंगे। मुरली कब भी बासी नहीं होती है। पढ़े नहीं हैं तो बासी भी नहीं है। 5 ता. की मुरली उनको 15ता. को मिलती है तो उनके लिए वो बासी नहीं है। बच्चों को कोई ऐसी करतूत नहीं करनी चाहिए जिससे कि कोई को घृणा आये। हियर नो फाल्तू बातें। बाबा बच्चों को सावधान करते हैं कि कब भी कोई से भी दुनियां की खबर, झरमुई, झगमुई ना सुननी चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं तो पढ़ाई में अच्छा ध्यान देना चाहिए। यह भी कब खयाल नहीं आना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। हम तो 10रुपये देकर करोड़ लेते हैं। बहुत खबरदार रहना है। बहुत बच्चे हैं जो कि एक/दो को सुनाकर देते हैं कि हम यह देते हैं तो भी ताकत चली जाती है। अहंकार आ जाता है। हम तो शिवबाबा से बहुत लेते हैं। अभी नहीं लेंगे तो विनाश सामने खड़ा है। बाद में सब मिट्टी में मिल जावेगा। तो क्यों नहीं एक्सचेंज कर लेवें। बाबा यह हम आपको देते हैं सतयुग में लेने लिये। बाप तो दाता है ना। तो ऐसा नहीं सोचना है। ओम।